**The International Journal of Advanced Research In Multidisciplinary Sciences**
**(IJARMS)**
Volume 1 Issue 1, 2018

# इदं एवं पराहमं के संघर्ष के मध्य झूलते असामान्य चरित्र

Mk0 dk'kyUn flg
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
पटेल श्री टीकाराम पी0जी0 कॉलेज, साईं बगदाद मल्लवॉ, हरदोई (उ0प्र0)

मनोविश्लेषण में 'ईगो' धारणा ने पर्याप्त ख्याति पाई और इस सिद्धान्त के अनुसार 'ईगो' व्यक्तित्व की वह संस्था है जो तर्क बुद्धि पर आधारित है। इदम् का वह रूप जो यथार्थता से प्रभावित होकर विकसित होता है, अहम् है। व्यक्ति अपने जीवन में कुछ अनुभव प्राप्त करता है उसके आधार पर अहम् का विकास होता है। अतः वह भौतिक वातावरण से अनुकूलित होता है। जन्मते ही व्यक्ति में अहम् जैसा कुछ तथ्य या भाग नहीं होता। बच्चे के बढ़ने पर बाह्य सम्पर्क में आने पर उनकी अहं धारणा का विकास होता है। अहम् व्यक्ति के व्यक्तित्व में सामंजस्य लाता है। यह इदम् परहम् को नियंत्रित तथा शासित करता है और समग्र व्यक्तित्व के हित और उसकी दूरस्थ आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये बाह्य जगत् से सम्पर्क बनाये रखता है। अहम् के कार्य–सम्पादन निपुणता से करने पर सामंजस्य की स्थिति बनी रहती है। इदम् की पशुकृतियों पर अहम् तर्क बुद्धि अक्षमताओं से अंकुश लगाता है। किन्तु अहम् स्वयं सर्व शक्तिमान नहीं होता। वह उस आदि स्रोत पर ही निर्भर करता है।

'ईगों' को मूल प्रवृत्ति जन्य माँगों की तुष्टि में कोई आपत्ति नहीं, पर सुरक्षा उसे सुखानुभव से पूर्वाकांक्षित है। 'ईगो' के लिए सुरक्षा प्रथम है, सुख द्वितीय है। 'इड' सुख के लिए सुरक्षा की चिन्ता नहीं करता। इस तरह अहम् यथार्थतत्व से परिचालित है तथा अहं का महत्वपूर्ण कार्य यथार्थता में सम्पर्क सीमित करना होता है। अतः यह आन्तरिक और बाह्य उद्दीपनों को प्रत्यक्ष करता है। मूल प्रवृतिजन्य माँगों के औचित्य का ध्यान रख उनकी सफल तुष्टि की संभावना पर विचार करता है। इस तरह उसे तीन–तीन कठोर स्वामियों की सेवा में रत रहना पड़ता है। बाह्य जगत्, दूसरा इदम् और तीसरा नैतिक मन। इन तीनों के बीच संतुलन बनाये रखना होता है, जिससे बाह्य संसार की मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, धार्मिक सीमा के भीतर ही मर्यादित ढंग से इदम् की इच्छा पूर्ति होकर व्यक्तित्व स्वस्थ और खिंचाव तनाव के भार के भार से मुक्त हो सकें।

से0रा0 यात्री की 'छूटा हुआ कुछ' कहानी मनोविज्ञान की एक धारा 'बुद्धत्व' की ओर इशारा करती है, जिसके फलस्वरूप व्यक्ति उम्र बढ़ जाने पर भी अपने अतीत से चिपका

हुआ रहता है। कथा–नायिक की पत्नी के पास एक मंजूषा थी जिस पर हाथी दाँत का एक छोटा–सा हाथी या भीतर एक नाखून सँभालकर रखा था। उसके खो जाने पर रेणु परेशान हो गयी। उसे लगा कि वह अतीत से कटकर जीवित नहीं रह सकती। रेणु आत्मकेन्द्रित थी। जीने की इच्छा विवशता में बदल चुकी थी। उसका हँसना एवं रोना दोनों हिस्टीरिया के दौरे के समान होने लगा। मनोविज्ञान सही दावा करता है कि हम जिसे अच्छी तरह से जानने का दावा करते हैं उसे हम बीस–बीस साल साथ रहकर भी जान नहीं सकते। ''जिस औरत को वह बीस वर्षो से राईरती जाने का दंभ भरता था वह भीरतर से किस मारक द्वन्द्व में ग्रस्त थी और छील देने वाली भाषा का बखूबी इस्तेमाल कर सकती थी।''153 मनोवैज्ञानिकों का कथन है कि कोई किसी को पूरे रूप से जान नहीं सकता। जानने का दावा करने वाले खुद को गलत साबित करवाते हैं। सारी जिन्दगी एक तरफ और हाथी दाँत वाली मंजूषा और नाखून एक तरफ। अचेतन मन यदि जिन्दगी के किसी स्थान पर रुक गया तो वही रुका होता है। शेष जिन्दगी का कोई अर्थ नहीं होता।

नायिका रेण की पूरी जिन्दगी इदं एवं पराहमं के संघर्ष में गुजर जाती है।

इड का मुख्य कार्य शारीरिक इच्छाओं की संतुष्टि है। इदं किसी भी प्रकार के तनाव से तात्कालिक छुटकारा पाना चाहता है। तात्कालिक तनाव–निवारण को ही सुखवाद नियम (Pleasure principle) कहा गया है। जबकि सुपरइगो अहं का धनात्मक पक्ष है। अन्तर्आत्मा सुपर ईगो का ऋणात्मक पक्ष है जिसमें संरक्षक और समाज जिन बातों को बुरा समझते हैं वह अवगुण सम्मिलित होते हैं। अन्तर्आत्मा द्वारा व्यक्ति यह सीखता है कि समाज में क्या अनुचित है, उसके संरक्षक किन बातों को अनुचित समझते हैं आदि। जब कोई व्यक्ति समाज के आदर्शों और मूल्यों के प्रतिकूल कार्य करता है तो अन्तर्आत्मा के कारण उसमें चिन्ता और अपराध भावना उत्पन्न (Guilt feeling) हो सकती है।

सत्यराज की 'अनधिकृत स्वप्न' कहानी एक वृद्ध पिता के अहम् के टकराहट की कहानी है। कुन्ती को उसके पति किशनलाल ने कहा था कि अपने अजय के पास भले ही कोठी, कार और इज्जत हो। तुम वहाँ मत जाओ। पर माँ की ममता ने उसे विवश कर दिया और वह चली गयी। कुन्ती को लगता था कि उसका बेटा श्रवणकुमार की तरह उसकी सेवा करेगा। परकिशनलाल का कहना था ''यह तुम्हारा भ्रम है, कुन्ती। यह तुम नहीं, तुम्हारी ममता का लिया हुआ निर्णय है। आज जीवन की बहुत–सी मान्यताएँ समय की तेज धार पर चल–चल कर टुकड़ों में बैठ गयी हैं।''154 नवीन मान्यताओं को किशनलाल ने पहचाना था, कुन्ती ने नहीं।

पति–पत्नी दोनों का अपना अहम् था। कुन्ती का ''अहम् जाग उठा–तू देखना कुन्ती, हफ्ते–दो–हफ्तों में ही तेरे पति तेरे निर्णय के आगे झुक जायेंगे और तेरे पास जा पहुँचेगें।''155 पर कुन्ती का अहम् झूठा सिद्ध हुआ। न तो किशनलाल आए न उनका कोई पत्र।

जीवन की सुविधाओं के बीच घिरकर भी कुन्ती जीवन में कुछ सूनापन और खोया पन महसूस करती। अक्सर उसे अपने पति पर क्रोध आता। क्यों वह भी आकर बेटे के साथ नहीं रहते। ''आखिर उस जर्जर जिन्दगी में उन्हें क्या रस मिलता है?..... कुन्ती का मन अचानक पति के दर्द को याद कर बैठा लेकिन उसका अहम् जाग उठा, जब आदमी कहना ही न माने तो उसके विषय में क्या सोचा जायें?''156

किशनलाल का पत्र आने पर भी वह पढ़ना नहीं चाहती। ''वह भी क्या आदमी जो स्वाभिमान की आग में जलकर जबरदस्ती संघर्षों का आवरण ओढ़ना चाहता हो।..... तेरे बाबूजी जैसा पत्थर दिल इंसान मैंने नहीं देखा। ..... एक दो महीने में तंग होकर अपने आप चले जायेंगे। मगर तू देता है आज दो–तीन क्या पूरे छः महीने होने को हैं। वह अपनी नौकरी में मस्त है।''157 बेटे ने भी माँ की ही बात को दुहरा दिया कि बाबूजी किसी की बात को मानते नहीं। वे चलने–फिरने में समर्थ हैं तब तक नौकरी नहीं छोड़ेंगे।

डॉक्टर द्वारा कुन्ती की छूत का रोग बताते ही बेटे का व्यवहार बदल गया। अब उसे लगा कि पति ऐसा नहीं कर सकता था। फिर भी उसका अहम् पत्र लिखने से रोकता है। वह पड़ी–पड़ी सोचती वह क्यों हार माने? दूसरे दिन देखती है कि उसका पति उसे देखने चला आया है। तब उसका अहम् हार गया।

मणिका मोहिनी हिन्दी जगत की बड़ी बोल्ड लेखिका हैं। ''हम बुरे नहीं थे' की नायिका एम0ए0 है परन्तु उसके संस्कार देहाती है। 'ताश, सिगरेट, शराब का नाम लेने मा से तुम्हारी उसकी नैतिकता भंग हो जाती है।''158 पति के साथ भी कोई उसे हँसकर बोल लेता तो उसका पतिव्रत धर्म नष्ट हो जाता। उसका पति तो कई बार चाहता था कि उसके पति ब्रत धर्म को गोली मार दें पत्नी बेचारी का अहम् खण्डित होता। वह भीतर–ही–भीतर घुटती हुई अपनी माँ को कोसती रहती। उसकी माँ ने उसे इतनी घटिया किस्म की ट्रेनिंग क्यों दी कि ताश को छुए तो अपवित्र हो जाए सिगरेट–खराब की तरफ देखे तो पाप लग जाये। ''माँ ने यह क्यों नहीं सोचा कि वह तो पुराने जमाने की है लेकिन जिन बच्चों को वह जन्म दे रही है, उनके बड़े होते–होते जमाना नया आ जायेगा?''159 माँ की डिक्शनरी में 'क्लव' शब्द नहीं था। शादी के पहले तो उसे उसकी माँ देवी लगती रही पर शादी के बाद उसे हमेशा लगता माँ ने उसकी माँ बनकर गलती की। ''माँ, जिसने न हुए का अर्थ समझा, न शे का। माँ, जिसका यदि बस चलता को शब्दकोश से 'क्लब' शब्द निकाल देती। माँ, जो निहायत मूर्ख थी। माँ, जिसकी दी हुई पवित्रता और नैतिकता की शिक्षा मेरे जीवन को नरक बना गयी थी।''160

इदं एवं पराहम् में खींचचानी से व्यक्ति का व्यक्तित्व असामान्य होता है और उसके व्यक्तित्व का विघटन होता जाता है। सामान्य व्यक्तित्व के लिए आवश्यक है इदं, अहं एवं पराहम् में सामंजस्य और समन्वय बना रहे। जब इन तीनों इकाइयों में से कोई एक अन्य दो की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली हो जाती है तो समन्वय और सामंजस्य बिगड़ जाता है

और विघटन प्रारम्भ हो जाता है। इगो व्यक्तित्व का केन्द्रक है। यह इड सुपरइगो और वातावरण की वास्तविकताओं के मध्य समन्वय और सामंजस्य बनाकर क्रिया या व्यवहार करता है जिस व्यक्ति में सुपरइगो प्रबल होता है, वह व्यक्ति आदर्शवादी होता है। उसमें भले–बुरे का विचार अधिक रहता है।

'शटल' कहानी का पिता ईश्वरदास के व्यक्तित्व में 'सुपरइगो' प्रभावी है। अतः वह उचित अनुचित समझता है। पर उसकी पत्नी इदं एवं सुपरईगो के मध्य झूलती है। 'शटल का पिता ईश्वरदास सोचता है जो सारी उमर अपनी कमाई से खाता–पीता रहा, छाती तानकर जीने का आदी रहा, वह अब खाने के लिए उनके द्वार पर क्यों जाकर बैठेगा? उसका अहम् इस बात के लिए कतई राजी नहीं। ''ईश्वरदास भूखा मर जायेगा, पर इनके द्वार पर नहीं बैठेगा। नहीं दे सकते तो मत तो–कोई तुमसे आस लगाए नहीं बैठा।''161

बेटों के लिए बाप से वैसे कोई लाभ नहीं था। वे अपनी माँ को अपने पास रखने के लिए लालायित रहते थे। कारण ''वह उनके बच्चों को सँभाले। रोटियाँ पका दिया करें। जब वे बाहर जाना चाहें तो घर की रखवाली किया करें। ..... चाहेंगे कि माँ के रूप में रोटी भर देकर सस्ती और विश्वसनीय नौकरानी का इन्तजाम कर लें।''162 बाप सोचता सालों को साहबी सूझती है। बीवियों से काम कराने में कलेजे में टीस उठती है, ईश्वरदास इन बातों के लिए एकदम तैयार नहीं थे। वह अपनी पत्नी से ऐसी नौकरी करवा कर बच्चों से आर्थिक सहायता कभी नहीं चाहते थे। पर यदि कोई लड़का आकर उनके अहम् को सहलाता, उनसे सहायता माँगता तब वे अपने भीतर छिपे हुए पिता को रोक नहीं पाते। उनकी पत्नी भागवन्ती उन्हें कोसती हुई चली जाती। ईश्वरदास का अपना अहम् इस बात को अच्छी तरह से जानता था कि ''वह बहुत बूढ़ा हो चुका है। उसमें और बच्चों में जीवन की सामान्य आवश्यकताओं के सिवाय और सम्पर्क नहीं रह गया है। ..... वह उनके लिए एक ऐसी पुरानी वस्तु है, जो घर में बेकार पड़ी है, पर मोह या लोक–लाज के कारण उसे किसी प्रकार बाहर फेंका भी नहीं जा सकता।''163

पिता का अहम् कुछ ऐसा है कि बहुओं ने एक बार थाली में जो परोस दिया उतना ही खाकर के रहते हैं। वे माँगते नहीं। वे भागवन्ती के आने तक मैले ही कपड़े पहनते हैं कारण वे स्वयं नहीं जानते कि उनके कपड़े घर में कहाँ रखे हैं। भागवन्ती के जाते ही उनके लिए घर पराया हो जाता है। बड़ी बहू की तबियत ठीक नहीं होती तब तक भागवन्ती को वहाँ रहना है। भागवन्ती के बिना ईश्वरदास की मानसिक अवस्था कैसी होती है उसे नरेन्द्र कोहली के शब्दों में – ''उसे लगा, उसका कमरा किसी ने बाहर से बन्द कर दिया है और वह कमरा न रहकर पिंजरा बन गया है। फिर वह पिंजरा दिन–प्रतिदिन छोटा होता जा रहा है और वह उसमें दबता जा रहा है।''164

उस पर कोई यह ताना कसता है कि ''अम्मा के बगैर बाबूजी का अब भी मन नहीं लगता है, तो बहुत बुरा लगता है। वे एक मनुष्य के रूप में क्यों नहीं सोचते? बड़े बेटे के

घर पहुँचकर जब वे भागवन्ती से मिलते हैं, तो उन्हें लगता है कि उसका चेहरा मुरझा गया है। उसकी तबियत ठीक नहीं है। ईश्वरदास के मन में बड़े बेटे के लिये बहुत सारा आक्रोश जमा हो जाता है। 'बीबी का रंग लाल सुर्ख हो रहा है पर उसे अभी कमजोरी है और इस बूढ़ी के शरीर में एक बूँद खून नहीं है, फिर भी वह काम कर रही है।''165 उसके मन में आता है कि भागवन्ती से कहे कि यहाँ मरने की जरूरत नहीं है पर वे बेटे को नाराज करना नहीं चाहते।

बेटे के पूछने पर कि वे थैले में क्या लाए हैं? उनका अहम् दुःखी होता है कि उन्होंने कुछ लाए क्यों नहीं, पर लाते कहाँ से? जो कुछ था बेटों के लिए ही तो उन्होंने खर्च किया। अब तो रोटी मिल जाए वहीं काफी है। लौटते समय बेटा उसे एक रुपये का नोट दे रहा था। उनके मन में आया अपनी जेब खनखनाकर कहें बहुत पैसे हैं मेरे पास। पर चुपचाप ले लेते हैं। न चाहते हुए भी लौट आते हैं। पत्नी के मिलने के भी सारे अधिकार अब उनसे छिन गये थे।